INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

समकालीन भारतीय राजनीति में वीर सावरकर के हिन्दुत्व की अवधारणा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर
असिस्टेंट प्रोफेसर
(राजनीति विज्ञान विभाग)
कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध-पत्र "**समकालीन भारतीय राजनीति में वीर सावरकर के हिन्दुत्व की अवधारणा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन**" का उद्देश्य सावरकर के हिन्दुत्व की वैचारिक प्रकृति तथा समकालीन भारतीय राजनीति में उसके पुनर्पाठ का विश्लेषण करना है। अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें सावरकर की मूल रचनाओं, विशेषतः *हिन्दुत्व: हिन्दू कौन है?*, के साथ अकादमिक साहित्य एवं समकालीन राजनीतिक दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि सावरकर का हिन्दुत्व केवल धार्मिक अवधारणा न होकर **राष्ट्र, संस्कृति, इतिहास, भू-क्षेत्र और सामूहिक पहचान** से संबंधित राजनीतिक-सांस्कृतिक अवधारणा है। पितृभूमि और पुण्यभूमि की अवधारणाएँ उनके हिन्दुत्व चिंतन के प्रमुख आधार हैं। समकालीन राजनीति में सावरकर के विचारों के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिन्दू पहचान और राष्ट्रीय चेतना से संबंधित तत्वों की निरंतरता दिखाई देती है, किंतु उनका राजनीतिक अर्थ समय के साथ परिवर्तित और पुनर्संदर्भित भी हुआ है।

शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि **सावरकर का हिन्दुत्व समकालीन भारतीय राष्ट्रवाद और राजनीतिक पहचान को समझने का एक महत्वपूर्ण वैचारिक संदर्भ है**, जिसे उसके ऐतिहासिक मूल स्वरूप तथा वर्तमान राजनीतिक पुनर्पाठ—दोनों के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

प्रमुख शब्द (Keywords) : वीर सावरकर, हिन्दुत्व, राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, भारतीय राजनीति, धर्मनिरपेक्षता, राजनीतिक पहचान, हिन्दू राष्ट्र, समकालीन राजनीति।

प्रस्तावना

भारत का राजनीतिक अनुभव अपनी बहुलतापूर्ण सामाजिक संरचना, विविध धार्मिक परंपराओं, भाषायी विविधता और विभिन्न सांस्कृतिक समुदायों की सह-अस्तित्व की परंपरा के कारण राष्ट्र, राष्ट्रीयता और सामूहिक पहचान के प्रश्नों को विशेष जटिलता प्रदान करता है। आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद का विकास किसी एक वैचारिक धारा के माध्यम से नहीं हुआ, बल्कि इसके निर्माण में उदार राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, धार्मिक-सामुदायिक चेतना, समाज सुधार आंदोलनों तथा औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध विकसित राजनीतिक प्रतिरोध जैसी अनेक धाराओं की

भूमिका रही। इसी व्यापक वैचारिक परिदृश्य में विनायक दामोदर सावरकर का राजनीतिक चिंतन भारतीय राष्ट्रवाद की एक विशिष्ट व्याख्या के रूप में सामने आता है। सावरकर द्वारा प्रतिपादित 'हिन्दुत्व' इसी चिंतन का केंद्रीय तत्व है, जिसने बाद के भारतीय राजनीतिक विमर्श में व्यापक प्रभाव उत्पन्न किया।

सावरकर की हिन्दुत्व संबंधी अवधारणा को समझने के लिए उसे केवल धार्मिक संदर्भ में देखना पर्याप्त नहीं है। सावरकर ने 'हिन्दुत्व' को 'हिन्दू धर्म' से अलग एक व्यापक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक अवधारणा के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। उनकी प्रसिद्ध कृति *Hindutva : Who Is a Hindu?* में हिन्दुत्व की व्याख्या करते हुए राष्ट्र, संस्कृति, इतिहास, भू-क्षेत्र और सामूहिक पहचान के प्रश्नों को परस्पर संबद्ध किया गया है। इस दृष्टि से सावरकर के लिए 'हिन्दू' की पहचान केवल धार्मिक आस्था से निर्धारित नहीं होती, बल्कि एक साझा ऐतिहासिक-सांस्कृतिक चेतना तथा भारतभूमि के साथ विशिष्ट संबंध से भी जुड़ती है। इस अवधारणा में 'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' जैसे तत्वों को विशेष महत्व प्राप्त होता है। इसलिए सावरकर के हिन्दुत्व का अध्ययन भारतीय राजनीतिक चिंतन में राष्ट्र की परिभाषा और राष्ट्रीय समुदाय की सीमाओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

सावरकर का राष्ट्रवाद उस समय विकसित हुआ जब भारत औपनिवेशिक शासन, सामुदायिक राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के जटिल दौर से गुजर रहा था। इस ऐतिहासिक संदर्भ ने उनके राजनीतिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया। वे भारतीय राष्ट्र की एक ऐसी सांस्कृतिक व्याख्या प्रस्तुत करना चाहते थे जिसमें हिन्दू समुदाय को राष्ट्र की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक निरंतरता का प्रमुख आधार माना गया। इस संदर्भ में उनका राष्ट्रवाद महज राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग तक सीमित नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय समुदाय की सांस्कृतिक पहचान और उसके ऐतिहासिक स्वरूप के प्रश्न से भी जुड़ा हुआ था। यही विशेषता सावरकर के हिन्दुत्व को भारतीय राष्ट्रवाद की अन्य धाराओं, विशेषकर गांधी के सर्वधर्म-समभाव आधारित दृष्टिकोण और नेहरू के धर्मनिरपेक्ष एवं नागरिक राष्ट्रवाद, से अलग पहचान प्रदान करती है।

भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात संविधान निर्माताओं ने राष्ट्र की नागरिक अवधारणा को समानता, स्वतंत्रता, न्याय तथा धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धांतों के साथ जोड़ा। भारतीय संविधान ने राज्य की वैधता को किसी एक धर्म या धार्मिक समुदाय की पहचान से निर्धारित करने के बजाय नागरिकता की समानता और लोकतांत्रिक संवैधानिक व्यवस्था पर आधारित किया। इस संदर्भ में सावरकर के हिन्दुत्व की सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा और भारतीय संविधान की धर्मनिरपेक्ष नागरिकता के बीच संबंध एवं संभावित अंतर्विरोध का अध्ययन राजनीतिक विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेष रूप से यह प्रश्न विचारणीय है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और संवैधानिक राष्ट्रवाद एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं या दोनों के बीच मूलभूत वैचारिक तनाव मौजूद है।

समकालीन भारतीय राजनीति में सावरकर के हिन्दुत्व की प्रासंगिकता इसी कारण और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। पिछले कुछ दशकों में भारतीय राजनीतिक विमर्श में हिन्दुत्व, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय पहचान और बहुसंख्यक राजनीतिक चेतना जैसे प्रश्न अधिक प्रमुख हुए हैं। इस प्रक्रिया में सावरकर को कभी हिन्दुत्व के वैचारिक आधार के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो कभी उनके विचारों की आलोचना बहुसंख्यकवादी राष्ट्रवाद के संदर्भ में की जाती है। राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों, सार्वजनिक विमर्श, चुनावी भाषणों, मीडिया तथा डिजिटल माध्यमों में सावरकर की वैचारिक विरासत की अलग-अलग व्याख्याएँ दिखाई देती हैं। परिणामस्वरूप सावरकर का हिन्दुत्व

केवल इतिहास या राजनीतिक चिंतन के अध्ययन का विषय न रहकर समकालीन राजनीतिक पहचान और राष्ट्रवाद के विमर्श का भी हिस्सा बन गया है।

हालाँकि, समकालीन राजनीति में 'हिन्दुत्व' शब्द के व्यापक राजनीतिक प्रयोग को सीधे सावरकर के मूल हिन्दुत्व के समान मान लेना एक गंभीर वैचारिक सरलीकरण होगा। सावरकर के समय की ऐतिहासिक परिस्थितियाँ, उनकी वैचारिक प्राथमिकताएँ और वर्तमान भारतीय राजनीति की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियाँ एक-दूसरे से भिन्न हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि सावरकर की मूल रचनाओं में व्यक्त हिन्दुत्व की अवधारणा का स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया जाए और उसके बाद यह देखा जाए कि समकालीन राजनीतिक में उसका पुनर्पाठ किस प्रकार हुआ है।

शोध समस्या (Research Problem)

सावरकर के हिन्दुत्व को लेकर भारतीय राजनीतिक में दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। एक ओर इसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकता की वैचारिक अवधारणा के रूप में देखा जाता है, जबकि दूसरी ओर इसे बहुसंख्यकवादी राजनीतिक पहचान और धार्मिक राष्ट्रवाद से जोड़कर आलोचना की जाती है। समस्या यह है कि इन दोनों दृष्टिकोणों के बीच सावरकर की मूल रचनाओं का व्यवस्थित और आलोचनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त, समकालीन राजनीति में प्रयुक्त 'हिन्दुत्व' और सावरकर के मूल 'हिन्दुत्व' के बीच निरंतरता तथा परिवर्तन को अलग-अलग करके समझना भी आवश्यक है।

अतः इस शोध की केंद्रीय समस्या यह है कि **सावरकर की हिन्दुत्व संबंधी मूल अवधारणा क्या थी और समकालीन भारतीय राजनीति में उसका पुनर्पाठ किस प्रकार किया जा रहा है?**

अध्ययन के उद्देश्य

1. वीर सावरकर की हिन्दुत्व संबंधी अवधारणा का वैचारिक विश्लेषण करना।
2. सावरकर के हिन्दुत्व में राष्ट्र, संस्कृति और इतिहास की भूमिका का अध्ययन करना।
3. हिन्दुत्व और सावरकर की राष्ट्र संबंधी अवधारणा के अंतर्संबंध को स्पष्ट करना।
4. सावरकर के हिन्दुत्व और भारतीय धर्मनिरपेक्षता के बीच वैचारिक संबंध एवं अंतर्विरोधों का विश्लेषण करना।
5. समकालीन भारतीय राजनीति में सावरकर के हिन्दुत्व के पुनर्पाठ का अध्ययन करना।
6. राजनीतिक पहचान के निर्माण में हिन्दुत्व की भूमिका का विश्लेषण करना।
7. सावरकर के मूल हिन्दुत्व और समकालीन राजनीतिक हिन्दुत्व के बीच निरंतरता एवं परिवर्तन को समझना।

शोध प्रश्न

समकालीन भारतीय राजनीति में वीर सावरकर के हिन्दुत्व की अवधारणा का पुनर्पाठ किस प्रकार किया जा रहा है?

अध्ययन की परिकल्पना/शोध-प्रस्थापना

प्रस्तुत अध्ययन निम्न शोध-प्रस्थापनाओं पर आधारित होगा–

a. सावरकर का हिन्दुत्व केवल धार्मिक अवधारणा न होकर सांस्कृतिक एवं राजनीतिक राष्ट्रवाद से संबंधित एक व्यापक वैचारिक संरचना है।

b. सावरकर के हिन्दुत्व में साझा इतिहास, भू-क्षेत्र, संस्कृति और सामूहिक स्मृति राष्ट्र की पहचान के महत्वपूर्ण आधार हैं।
c. समकालीन भारतीय राजनीति में सावरकर के हिन्दुत्व का पुनर्पाठ उनके मूल वैचारिक संदर्भ से आगे बढ़कर राजनीतिक पहचान और राष्ट्रवाद के विमर्श का हिस्सा बन गया है।
d. सावरकर के मूल हिन्दुत्व और समकालीन राजनीतिक हिन्दुत्व के बीच कुछ वैचारिक निरंतरताएँ होने के बावजूद दोनों को पूर्णतः समान मानना उचित नहीं है।

साहित्य समीक्षा

वीर सावरकर के हिन्दुत्व की अवधारणा पर उपलब्ध साहित्य को मुख्यतः चार प्रमुख धाराओं में समझा जा सकता है। इनमें सावरकर की मूल रचनाओं पर आधारित अध्ययन, हिन्दुत्व एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद संबंधी अध्ययन, हिन्दुत्व की आलोचनात्मक व्याख्याएँ तथा समकालीन भारतीय राजनीति में हिन्दुत्व से संबंधित अध्ययन प्रमुख हैं।

1. सावरकर के मूल विचारों पर साहित्य

सावरकर के हिन्दुत्व को समझने का प्रमुख आधार उनकी मूल कृति *Hindutva: Who Is a Hindu?* है। इसमें उन्होंने हिन्दुत्व को केवल धार्मिक आस्था न मानकर एक व्यापक सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पहचान के रूप में प्रस्तुत किया। 'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' की अवधारणाएँ उनकी हिन्दू पहचान संबंधी व्याख्या के महत्वपूर्ण तत्व हैं। उनकी अन्य रचनाओं, विशेषकर *Six Glorious Epochs of Indian History*, से उनके राष्ट्र, इतिहास और सांस्कृतिक चेतना संबंधी विचारों को समझने में सहायता मिलती है। इन प्राथमिक स्रोतों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सावरकर के हिन्दुत्व में संस्कृति, इतिहास, भू-क्षेत्र और सामूहिक पहचान का महत्वपूर्ण स्थान है।

2. हिन्दुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर साहित्य

हिन्दुत्व पर हुए अध्ययनों में इसे भारतीय राष्ट्रवाद की एक विशिष्ट सांस्कृतिक व्याख्या के रूप में भी देखा गया है। Christophe Jaffrelot ने हिन्दू राष्ट्रवादी विचारधारा और उसके राजनीतिक विकास का ऐतिहासिक अध्ययन किया है। Chetan Bhatt ने हिन्दू राष्ट्रवाद को आधुनिक राष्ट्रवाद और पहचान की राजनीति के संदर्भ में विश्लेषित किया है। इन अध्ययनों से यह समझने में सहायता मिलती है कि हिन्दुत्व धार्मिक पहचान के साथ-साथ राष्ट्र, संस्कृति और राजनीतिक समुदाय की अवधारणाओं से भी जुड़ा हुआ है।

3. हिन्दुत्व की आलोचनात्मक व्याख्याएँ

हिन्दुत्व पर उपलब्ध आलोचनात्मक साहित्य में इसे बहुसंख्यकवादी राजनीति, सामुदायिक पहचान और धर्मनिरपेक्षता के प्रश्नों से जोड़कर देखा गया है। Thomas Blom Hansen ने हिन्दू राष्ट्रवाद को आधुनिक लोकतांत्रिक राजनीति और राजनीतिक लामबंदी के संदर्भ में समझाया है। Paul R. Brass के अध्ययनों से भारत में सामुदायिक पहचान और राजनीतिक संघर्ष के संबंधों को समझने में सहायता मिलती है। वहीं Rajeev Bhargava के भारतीय धर्मनिरपेक्षता संबंधी अध्ययन से हिन्दुत्व की सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा और संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता के बीच संबंधों का विश्लेषण करने का आधार प्राप्त होता है।

4. समकालीन भारतीय राजनीति पर साहित्य

समकालीन भारतीय राजनीति में हिन्दुत्व के अध्ययन में इसके चुनावी राजनीति, राजनीतिक लामबंदी, राष्ट्रवाद और पहचान निर्माण से संबंधों पर विशेष ध्यान दिया गया है। Jaffrelot और Hansen के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि हिन्दुत्व एक वैचारिक अवधारणा के साथ-साथ राजनीतिक संगठन और लामबंदी का आधार भी बना है। समकालीन राजनीतिक विमर्श में सावरकर का उल्लेख राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पहचान और हिन्दुत्व की वैचारिक विरासत के संदर्भ में किया जाता है।

5. शोध-अंतर (Research Gap)

उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है कि सावरकर के हिन्दुत्व, हिन्दू राष्ट्रवाद तथा समकालीन भारतीय राजनीति पर पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध हैं। फिर भी सावरकर की मूल हिन्दुत्व अवधारणा और समकालीन राजनीति में उसके **पुनर्पाठ एवं राजनीतिक उपयोग** के बीच संबंध का समेकित विश्लेषण अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतर को ध्यान में रखते हुए सावरकर के मूल विचारों और समकालीन राजनीतिक विमर्श के बीच निरंतरता एवं परिवर्तन का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

वीर सावरकर और हिन्दुत्व की अवधारणा

वीर विनायक दामोदर सावरकर के राजनीतिक चिंतन में 'हिन्दुत्व' एक केंद्रीय अवधारणा है। सावरकर ने हिन्दुत्व को केवल धार्मिक विश्वास या पूजा-पद्धति के अर्थ में नहीं लिया, बल्कि इसे इतिहास, संस्कृति, भू-क्षेत्र और सामूहिक पहचान से संबंधित व्यापक अवधारणा के रूप में विकसित किया। उनकी 1923 में प्रकाशित कृति *Hindutva: Who Is a Hindu?* इस विचार को समझने का प्रमुख प्राथमिक स्रोत है। इस कृति में सावरकर ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि 'हिन्दू' की पहचान किन सांस्कृतिक और राष्ट्रीय आधारों पर निर्मित होती है। इसलिए उनके हिन्दुत्व का अध्ययन करते समय उनके मूल वैचारिक संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है।

1. हिन्दुत्व की संकल्पना का उद्भव

सावरकर के हिन्दुत्व संबंधी विचार औपनिवेशिक भारत में विकसित हुए, जब भारतीय राष्ट्रवाद अपनी विभिन्न वैचारिक धाराओं के बीच आकार ले रहा था। सावरकर ने राष्ट्र की समस्या को केवल औपनिवेशिक शासन से राजनीतिक मुक्ति के प्रश्न के रूप में नहीं देखा, बल्कि राष्ट्रीय समुदाय की पहचान के प्रश्न से भी जोड़ा। *Hindutva: Who Is a Hindu?* में उन्होंने 'Hindutva' को 'Hinduism' से अलग अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया। उनके लिए हिन्दुत्व का संबंध हिन्दू समाज की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पहचान से था। इस प्रकार हिन्दुत्व को धार्मिक सिद्धांतों के संग्रह के बजाय एक ऐसी सामूहिक चेतना के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें साझा इतिहास, संस्कृति, परंपरा और भारतभूमि के साथ संबंध महत्वपूर्ण हैं।

इस अवधारणा के माध्यम से सावरकर यह निर्धारित करने का प्रयास करते हैं कि भारत को अपनी मातृभूमि और सांस्कृतिक भूमि के रूप में देखने वाला समुदाय किस प्रकार एक विशिष्ट राष्ट्रीय पहचान का निर्माण करता है। इसीलिए उनके हिन्दुत्व में धर्म के साथ-साथ राष्ट्र और संस्कृति का प्रश्न भी केंद्रीय बन जाता है।

2. 'हिन्दुत्व' और 'हिन्दू धर्म' में अंतर

सावरकर के विचारों को समझने के लिए 'हिन्दुत्व' और 'हिन्दू धर्म' के बीच उनके द्वारा किए गए अंतर को समझना आवश्यक है। सावरकर के अनुसार हिन्दुत्व को केवल धार्मिक विश्वासों, धार्मिक अनुष्ठानों अथवा किसी विशिष्ट धार्मिक सिद्धांत तक सीमित नहीं किया जा सकता। इसके अंतर्गत भाषा, संस्कृति, इतिहास, सामाजिक स्मृति और भारतभूमि के साथ संबंध जैसे व्यापक तत्व आते हैं। इस प्रकार सावरकर के हिन्दुत्व का क्षेत्र हिन्दू धार्मिक सिद्धांतों से व्यापक है। उनके लिए किसी व्यक्ति या समुदाय की हिन्दू पहचान का प्रश्न केवल उसकी धार्मिक आस्था का प्रश्न नहीं, बल्कि एक साझा सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक समुदाय से संबंधित प्रश्न भी है।

यह अंतर सावरकर के हिन्दुत्व को भारतीय राजनीतिक चिंतन में विशिष्ट बनाता है। हालांकि, इसी बिंदु पर उनके विचारों की आलोचना भी हुई है, क्योंकि सांस्कृतिक राष्ट्र की ऐसी परिभाषा में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि विभिन्न धार्मिक समुदायों की समान राष्ट्रीय सदस्यता को किस आधार पर परिभाषित किया जाए।

3. सावरकर की हिन्दू की परिभाषा

सावरकर ने 'हिन्दू' की पहचान को धार्मिक पहचान से आगे बढ़ाकर भू-क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संबंधों से जोड़ा। उनकी प्रसिद्ध अवधारणा में भारत को **पितृभूमि (Fatherland)** और **पुण्यभूमि (Holyland)** दोनों के रूप में स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। सावरकर की दृष्टि में हिन्दू वह है जो भारतभूमि को अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि दोनों के रूप में देखता है। इस परिभाषा का आधार केवल धार्मिक विश्वास नहीं, बल्कि भारत के साथ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंध है।

यहाँ यह उल्लेख आवश्यक है कि सावरकर की यह परिभाषा आधुनिक संवैधानिक नागरिकता की परिभाषा से अलग वैचारिक धरातल पर स्थित है। भारतीय संविधान नागरिकता और समानता को धर्म-आधारित सांस्कृतिक पहचान से अलग आधार प्रदान करता है। इसलिए सावरकर की हिन्दू की अवधारणा का अध्ययन करते समय उसे आधुनिक संवैधानिक नागरिकता के साथ सीधे समान नहीं किया जाना चाहिए।

4. पितृभूमि और पुण्यभूमि

'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' सावरकर के हिन्दुत्व दर्शन के दो महत्वपूर्ण तत्व हैं। पितृभूमि से आशय उस भूमि से है जिसे व्यक्ति अपने पूर्वजों की भूमि के रूप में स्वीकार करता है, जबकि पुण्यभूमि धार्मिक-सांस्कृतिक पवित्रता से संबंधित भूमि को इंगित करती है। सावरकर के अनुसार भारत उन समुदायों के लिए पितृभूमि और पुण्यभूमि दोनों है जिनकी धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का उद्भव भारत में हुआ है। इसी आधार पर वे हिन्दू समुदाय की एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान निर्मित करते हैं।

इस अवधारणा का राजनीतिक महत्व इस बात में निहित है कि सावरकर राष्ट्रीय समुदाय की पहचान को केवल निवास या राजनीतिक नागरिकता से निर्धारित नहीं करते, बल्कि भूमि, इतिहास और धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृति के संयुक्त संबंध से जोड़ते हैं। यही तत्व उनके हिन्दुत्व को सामान्य नागरिक राष्ट्रवाद से अलग करता है और इसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के निकट ले जाता है।

5. साझा संस्कृति और ऐतिहासिक चेतना

सावरकर के हिन्दुत्व में साझा संस्कृति और ऐतिहासिक चेतना को विशेष महत्व प्राप्त है। उनके चिंतन में हिन्दू समुदाय की एकता केवल धार्मिक समानता पर आधारित नहीं है, बल्कि साझा ऐतिहासिक अनुभवों और सांस्कृतिक परंपराओं से भी निर्मित होती है। सावरकर भारतीय इतिहास को राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन मानते हैं। उनके ऐतिहासिक लेखन में विभिन्न संघर्षों, राजनीतिक आक्रमणों और हिन्दू समाज की प्रतिक्रियाओं का विशेष उल्लेख मिलता है। इस इतिहास-बोध का उद्देश्य केवल अतीत का वर्णन करना नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना को मजबूत करना भी था।

इस दृष्टि से सावरकर का हिन्दुत्व इतिहास को राजनीतिक पहचान के निर्माण से जोड़ता है। साझा अतीत की स्मृति समुदाय के भीतर एकता और सामूहिकता की भावना को मजबूत कर सकती है। हालांकि, इतिहास की ऐसी व्याख्या के संबंध में यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है कि क्या किसी बहुलतापूर्ण समाज की राष्ट्रीय पहचान को इतिहास की एक विशिष्ट सांस्कृतिक व्याख्या के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है।

6. हिन्दुत्व और सामूहिक पहचान

सावरकर की हिन्दुत्व अवधारणा का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामूहिक पहचान का निर्माण है। उनके चिंतन में हिन्दू समाज को एक ऐसे ऐतिहासिक-सांस्कृतिक समुदाय के रूप में देखा जाता है जिसकी साझा पहचान उसके भू-क्षेत्र, इतिहास, संस्कृति और परंपराओं से निर्मित होती है। यहाँ हिन्दुत्व केवल व्यक्तिगत धार्मिक पहचान नहीं रह जाता, बल्कि सामूहिक राजनीतिक पहचान का रूप ग्रहण करता है। यही कारण है कि सावरकर के हिन्दुत्व को आधुनिक पहचान की राजनीति के संदर्भ में भी पढ़ा जा सकता है। सामूहिक पहचान के निर्माण में 'हम' की भावना के साथ-साथ यह प्रश्न भी उपस्थित होता है कि राष्ट्रीय समुदाय की सीमाएँ कहाँ तक निर्धारित की जाएँ।

इस संदर्भ में सावरकर का हिन्दुत्व एक ओर हिन्दू समाज के भीतर एकता और राजनीतिक चेतना को विकसित करने का प्रयास दिखाई देता है, तो दूसरी ओर यह बहुधार्मिक समाज में विभिन्न समुदायों की राष्ट्रीय पहचान और समान नागरिकता के प्रश्न को भी जन्म देता है। यही द्वंद्व सावरकर के हिन्दुत्व को समकालीन राजनीति के लिए प्रासंगिक बनाता है।

7. हिन्दुत्व और राष्ट्र की अवधारणा

सावरकर के हिन्दुत्व का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण आयाम उनकी राष्ट्र संबंधी अवधारणा है। उनके चिंतन में राष्ट्र केवल राज्य या राजनीतिक सीमा का नाम नहीं है। राष्ट्र एक ऐसे ऐतिहासिक-सांस्कृतिक समुदाय का भी संकेत करता है जिसकी पहचान साझा भूमि, इतिहास, संस्कृति और सामूहिक स्मृति से निर्मित होती है। इसी आधार पर सावरकर हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा प्रस्तुत करते हैं। यहाँ 'राष्ट्र' की उनकी व्याख्या आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य की संस्थागत संरचना से अलग सांस्कृतिक आधार पर निर्मित होती है। इसलिए सावरकर के हिन्दुत्व को समझने के लिए राष्ट्र, संस्कृति और सामूहिक पहचान के बीच स्थापित उनके संबंध का अध्ययन आवश्यक है।

यहीं से सावरकर के हिन्दुत्व और भारतीय राष्ट्रवाद की अन्य धाराओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर सामने आता है। जहाँ नागरिक राष्ट्रवाद राष्ट्रीय सदस्यता को समान नागरिकता और संवैधानिक अधिकारों के आधार पर समझता है, वहीं सावरकर की अवधारणा में सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संबंध को विशेष महत्व मिलता है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि सावरकर का हिन्दुत्व बहुस्तरीय वैचारिक अवधारणा है। इसमें धर्म के साथ-साथ संस्कृति, इतिहास, भू-क्षेत्र, सामूहिक स्मृति और राष्ट्र की अवधारणा परस्पर संबद्ध हैं। 'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' की

अवधारणा इसके केंद्रीय तत्वों में है, जिसके माध्यम से सावरकर हिन्दू समुदाय की विशिष्ट राष्ट्रीय-सांस्कृतिक पहचान को परिभाषित करने का प्रयास करते हैं।

हालाँकि, सावरकर के हिन्दुत्व का समकालीन मूल्यांकन करते समय उनके विचारों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ में पढ़ना आवश्यक है। साथ ही, उनके मूल हिन्दुत्व और वर्तमान राजनीतिक विमर्श में प्रयुक्त 'हिन्दुत्व' को स्वतः समान मानना उचित नहीं होगा। दोनों के बीच संबंधों को समझने के लिए वैचारिक निरंतरता के साथ-साथ समय, राजनीति और सामाजिक परिस्थितियों के कारण हुए परिवर्तनों का भी अध्ययन आवश्यक है। यही प्रश्न इस शोध को आगे समकालीन भारतीय राजनीति में सावरकर के हिन्दुत्व के पुनर्पाठ की ओर ले जाता है।

सावरकर का हिन्दुत्व और राष्ट्रवाद

वीर सावरकर के राजनीतिक चिंतन में हिन्दुत्व और राष्ट्रवाद एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। उनके लिए राष्ट्र केवल एक निश्चित भौगोलिक सीमा के भीतर स्थित राजनीतिक इकाई नहीं था, बल्कि साझा इतिहास, संस्कृति, परंपरा और सामूहिक स्मृति से निर्मित एक सांस्कृतिक समुदाय भी था। इसी आधार पर उन्होंने हिन्दुत्व को हिन्दू समुदाय की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक पहचान के रूप में प्रस्तुत किया।

a. राष्ट्र की सांस्कृतिक अवधारणा

सावरकर की राष्ट्र संबंधी अवधारणा में संस्कृति को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनकी दृष्टि में किसी राष्ट्र की पहचान केवल राजनीतिक संस्थाओं या राज्य की सीमाओं से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उसके ऐतिहासिक अनुभवों, सांस्कृतिक परंपराओं और सामूहिक स्मृतियों से भी निर्मित होती है। इस संदर्भ में हिन्दुत्व उनके लिए हिन्दू समाज की सांस्कृतिक एकता को व्यक्त करने वाली अवधारणा बन जाता है। सावरकर की यह दृष्टि नागरिक राष्ट्रवाद से अलग है, जिसमें राष्ट्र की सदस्यता मुख्यतः समान नागरिकता और राजनीतिक अधिकारों पर आधारित होती है। उनके चिंतन में सांस्कृतिक संबंध राष्ट्रीय पहचान के महत्वपूर्ण आधार के रूप में सामने आता है।

b. भूमि और राष्ट्रीय पहचान

सावरकर के हिन्दुत्व में भारतभूमि का विशेष महत्व है। 'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' की अवधारणाओं के माध्यम से उन्होंने भूमि और सांस्कृतिक पहचान के बीच संबंध स्थापित किया। उनके अनुसार भारत केवल निवास का स्थान नहीं, बल्कि हिन्दू समुदाय की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चेतना का आधार भी है। इस प्रकार भू-क्षेत्र सावरकर की राष्ट्र अवधारणा में केवल भौगोलिक तत्व नहीं रह जाता, बल्कि वह सामूहिक पहचान का हिस्सा बन जाता है। यही तत्व उनके हिन्दुत्व को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से जोड़ता है।

c. साझा इतिहास और राष्ट्रीय चेतना

सावरकर के चिंतन में इतिहास राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन है। वे हिन्दू समाज के ऐतिहासिक अनुभवों, संघर्षों और उपलब्धियों को सामूहिक स्मृति का हिस्सा मानते हैं। इस दृष्टि से इतिहास अतीत का निष्क्रिय विवरण न होकर वर्तमान राजनीतिक चेतना को प्रभावित करने वाला माध्यम बन जाता है। उनकी

ऐतिहासिक दृष्टि का एक उद्देश्य हिन्दू समाज में सामूहिक चेतना और राजनीतिक एकता का विकास करना भी था। इसलिए हिन्दुत्व की अवधारणा में इतिहास और राष्ट्रवाद का संबंध केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि राजनीतिक भी है।

d. सांस्कृतिक एकता

सावरकर के लिए भारत में हिन्दू समुदाय की एकता का आधार केवल धार्मिक विश्वास नहीं था। भाषा, संस्कृति, परंपरा, ऐतिहासिक अनुभव और भूमि के साथ संबंध जैसे तत्व भी इस एकता के आधार थे। इस प्रकार उन्होंने हिन्दू पहचान को एक व्यापक सांस्कृतिक समुदाय के रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया। यहाँ सांस्कृतिक एकता का प्रश्न राजनीतिक महत्व प्राप्त करता है, क्योंकि सावरकर के चिंतन में सांस्कृतिक रूप से एकजुट समुदाय ही प्रभावी राजनीतिक राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।

e. हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा

सावरकर के हिन्दुत्व चिंतन का महत्वपूर्ण परिणाम 'हिन्दू राष्ट्र' की अवधारणा है। उनके लिए हिन्दू राष्ट्र का अर्थ केवल धार्मिक शासन या धर्मतंत्र की स्थापना नहीं था। इसे उनके व्यापक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के संदर्भ में समझना अधिक उचित है। फिर भी, हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा राष्ट्रीय समुदाय की सांस्कृतिक परिभाषा से जुड़ी होने के कारण आधुनिक नागरिक राष्ट्र की अवधारणा से महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न करती है। विशेषकर बहुधार्मिक भारतीय समाज में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि राष्ट्र की सदस्यता का आधार सांस्कृतिक पहचान हो या समान नागरिकता।

f. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और राजनीतिक राष्ट्रवाद

सावरकर के हिन्दुत्व में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और राजनीतिक राष्ट्रवाद के बीच स्पष्ट संबंध दिखाई देता है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद साझा इतिहास और पहचान पर बल देता है, जबकि राजनीतिक राष्ट्रवाद इस सामूहिक चेतना को राजनीतिक संगठन और राष्ट्रीय शक्ति से जोड़ता है। सावरकर के चिंतन में हिन्दू समाज की सांस्कृतिक एकता को राजनीतिक शक्ति के लिए आवश्यक माना गया। इस प्रकार हिन्दुत्व केवल सांस्कृतिक पहचान का प्रश्न नहीं रहता, बल्कि राजनीतिक संगठन और राष्ट्रीय शक्ति के प्रश्न से भी जुड़ जाता है।

g. गांधी और नेहरू के राष्ट्रवाद से सीमित तुलना

सावरकर की राष्ट्र अवधारणा को बेहतर समझने के लिए गांधी और नेहरू के राष्ट्रवाद से सीमित तुलना उपयोगी है। गांधी का राष्ट्रवाद धार्मिक एवं सांस्कृतिक विविधता के सह-अस्तित्व तथा नैतिक-राजनीतिक एकता पर अधिक बल देता था। दूसरी ओर, नेहरू का राष्ट्रवाद आधुनिक नागरिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लोकतांत्रिक संस्थाओं और बहुलतावादी भारतीय राष्ट्रीयता से जुड़ा था। इसके विपरीत, सावरकर ने राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में सांस्कृतिक और ऐतिहासिक एकता को अधिक केंद्रीय स्थान दिया। इसलिए तीनों दृष्टिकोणों के बीच प्रमुख अंतर राष्ट्र की सांस्कृतिक परिभाषा, नागरिकता और धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान के संबंध में दिखाई देता है।

सावरकर का हिन्दुत्व उनके राष्ट्रवाद का आधारभूत वैचारिक तत्व है। इसमें भूमि, इतिहास, संस्कृति और सामूहिक पहचान के माध्यम से राष्ट्र की एक विशिष्ट सांस्कृतिक परिभाषा विकसित होती है। यही कारण है कि सावरकर का राष्ट्रवाद भारतीय राष्ट्रवाद की अन्य धाराओं से अलग दिखाई देता है। साथ ही, उनकी अवधारणा का मूल्यांकन करते समय यह ध्यान

रखना आवश्यक है कि आधुनिक भारतीय संविधान की नागरिक राष्ट्र की अवधारणा और सावरकर की सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा अलग वैचारिक आधारों पर निर्मित हैं।

हिन्दुत्व और भारतीय धर्मनिरपेक्षता

सावरकर के हिन्दुत्व का अध्ययन भारतीय धर्मनिरपेक्षता के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है, क्योंकि दोनों में राष्ट्र, धर्म, संस्कृति और नागरिकता के संबंध को समझने के अलग-अलग वैचारिक आधार दिखाई देते हैं। सावरकर ने हिन्दुत्व को धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं माना, जबकि भारतीय संविधान ने राज्य की वैधता को किसी विशिष्ट धार्मिक पहचान के बजाय समान नागरिकता, मौलिक अधिकारों और लोकतांत्रिक संवैधानिक व्यवस्था पर आधारित किया। इसलिए दोनों के संबंध का अध्ययन वैचारिक और संवैधानिक दोनों स्तरों पर किया जाना आवश्यक है।

i. सावरकर के हिन्दुत्व में धर्म और राष्ट्र का संबंध

सावरकर के लिए हिन्दुत्व और हिन्दू धर्म समानार्थी अवधारणाएँ नहीं थीं। हिन्दुत्व में संस्कृति, इतिहास, भूमि और सामूहिक पहचान जैसे तत्व शामिल थे। इस कारण उनके चिंतन में धर्म का प्रश्न व्यापक सांस्कृतिक पहचान के भीतर स्थित दिखाई देता है। उनकी 'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृति और राष्ट्रीय पहचान के बीच वे घनिष्ठ संबंध स्थापित करते हैं। इस दृष्टि से राष्ट्र केवल राजनीतिक समुदाय नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समुदाय भी है।

यहीं से सावरकर की अवधारणा और धर्मनिरपेक्ष नागरिक राष्ट्र की अवधारणा के बीच महत्वपूर्ण अंतर सामने आता है। सावरकर की राष्ट्र संबंधी व्याख्या सांस्कृतिक पहचान को विशेष महत्व देती है, जबकि आधुनिक संवैधानिक राष्ट्र नागरिकता को प्राथमिक आधार प्रदान करता है।

ii. भारतीय संविधान और नागरिकता की अवधारणा

भारतीय संविधान की मूल संरचना समानता, स्वतंत्रता, न्याय और धार्मिक स्वतंत्रता के सिद्धांतों पर आधारित है। संविधान नागरिकों के अधिकारों को उनकी धार्मिक पहचान से स्वतंत्र रूप से मान्यता देता है। अनुच्छेद 14 समानता का अधिकार सुनिश्चित करता है, जबकि अनुच्छेद 15 धर्म, जाति, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव के निषेध से संबंधित है। अनुच्छेद 25 से 28 धार्मिक स्वतंत्रता से संबंधित प्रावधान प्रदान करते हैं।

इस संवैधानिक व्यवस्था में नागरिकता का आधार किसी एक धार्मिक या सांस्कृतिक समुदाय की सदस्यता नहीं है। भारत की राजनीतिक समुदाय की अवधारणा संवैधानिक नागरिकता और समान अधिकारों पर आधारित है। यही बिंदु सावरकर की सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा से तुलना के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

iii. सांस्कृतिक राष्ट्र और संवैधानिक नागरिकता

सावरकर के हिन्दुत्व में राष्ट्रीय पहचान का एक महत्वपूर्ण आधार सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध है, जबकि संवैधानिक व्यवस्था में समान नागरिकता राष्ट्रीय सदस्यता का प्रमुख आधार है। दोनों दृष्टिकोणों में राष्ट्र की एकता का उद्देश्य समान हो सकता है, लेकिन उसे प्राप्त करने का वैचारिक मार्ग अलग है।

सावरकर सांस्कृतिक एकता और ऐतिहासिक चेतना पर बल देते हैं, जबकि संविधान विविधता के भीतर समान नागरिक अधिकारों और संस्थागत लोकतंत्र के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को स्थापित करता है। इसलिए सावरकर के हिन्दुत्व

और संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता के संबंध को समझने के लिए दोनों को उनके अलग-अलग वैचारिक संदर्भों में देखना आवश्यक है।

iv. धार्मिक बहुलता और हिन्दुत्व

भारत की सामाजिक संरचना बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक है। ऐसे समाज में किसी एक सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय पहचान का केंद्रीय आधार बनाने से प्रतिनिधित्व, समानता और अल्पसंख्यक अधिकारों से जुड़े प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं। सावरकर के हिन्दुत्व की आलोचना का एक प्रमुख आधार यही प्रश्न है कि यदि राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान को हिन्दू सांस्कृतिक विरासत से प्रमुख रूप से जोड़ा जाए, तो अन्य धार्मिक समुदायों की राष्ट्रीय पहचान को किस प्रकार परिभाषित किया जाएगा। दूसरी ओर, हिन्दुत्व के समर्थक दृष्टिकोण में इसे धार्मिक राज्य की स्थापना के बजाय भारत की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय एकता की अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इसलिए इस प्रश्न का मूल्यांकन करते समय दोनों पक्षों को ध्यान में रखना आवश्यक है। शोध का उद्देश्य किसी एक दृष्टिकोण को स्वीकार करना नहीं, बल्कि यह देखना है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और संवैधानिक बहुलतावाद के बीच व्यवहारिक एवं वैचारिक संबंध किस प्रकार निर्मित होते हैं।

v. हिन्दुत्व और धर्मनिरपेक्षता: वैचारिक तनाव

सावरकर के हिन्दुत्व और भारतीय धर्मनिरपेक्षता के बीच मुख्य वैचारिक प्रश्न राष्ट्र की पहचान से संबंधित है। यदि राष्ट्र को मुख्यतः सांस्कृतिक-ऐतिहासिक समुदाय के रूप में देखा जाए तो उसकी पहचान का आधार नागरिकता से आगे बढ़ जाता है। इसके विपरीत, संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता धार्मिक विविधता के बीच समान नागरिकता और राज्य की संस्थागत निष्पक्षता को महत्व देती है।

इस प्रकार दोनों के बीच तनाव को 'धर्म बनाम धर्मनिरपेक्षता' के सरल द्वंद्व के रूप में नहीं, बल्कि **सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा और नागरिक राष्ट्र की अवधारणा** के बीच अंतर के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

सावरकर का हिन्दुत्व और भारतीय संवैधानिक धर्मनिरपेक्षता राष्ट्र तथा सामूहिक पहचान को अलग-अलग वैचारिक आधारों से समझते हैं। सावरकर की अवधारणा में संस्कृति, इतिहास और भूमि से निर्मित सामूहिक पहचान महत्वपूर्ण है, जबकि भारतीय संविधान समान नागरिकता, मौलिक अधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता के आधार पर राजनीतिक समुदाय का निर्माण करता है।

इसलिए समकालीन भारतीय राजनीति में हिन्दुत्व की भूमिका का अध्ययन करते समय यह देखना आवश्यक है कि सांस्कृतिक पहचान और संवैधानिक नागरिकता के बीच किस प्रकार का संबंध विकसित हो रहा है। यही प्रश्न आगे के अध्याय में समकालीन भारतीय राजनीति में सावरकर के हिन्दुत्व के पुनर्पाठ और उसके राजनीतिक उपयोग के विश्लेषण का आधार बनेगा।

समकालीन भारतीय राजनीति में सावरकर के हिन्दुत्व का पुनर्पाठ

वीर सावरकर की हिन्दुत्व संबंधी अवधारणा का प्रभाव उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं रहा। स्वतंत्रता के बाद भी उनके विचार हिन्दू राष्ट्रवाद से संबंधित वैचारिक विमर्श का हिस्सा बने रहे और समय के साथ भारतीय राजनीति में उनका पुनर्पाठ विभिन्न रूपों में हुआ। समकालीन राजनीति में सावरकर को कभी राष्ट्रवादी क्रांतिकारी और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचारक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो कभी उनके हिन्दुत्व की आलोचना बहुसंख्यकवादी राजनीति के संदर्भ में की जाती है। इस प्रकार सावरकर की राजनीतिक विरासत स्वयं एक राजनीतिक विमर्श का विषय बन गई है।

1. सावरकर की राजनीतिक विरासत

सावरकर की राजनीतिक विरासत को समझने के लिए उनके हिन्दू महासभा से जुड़े राजनीतिक जीवन तथा हिन्दुत्व संबंधी लेखन को आधार बनाना आवश्यक है। सावरकर ने हिन्दुत्व को हिन्दू समुदाय की सांस्कृतिक एवं राजनीतिक एकता से जोड़ा और हिन्दू महासभा के नेतृत्व के दौरान इन विचारों को राजनीतिक कार्यक्रम और संगठनात्मक गतिविधियों से संबद्ध किया। उनके हिन्दुत्व संबंधी विचार बाद के हिन्दू राष्ट्रवादी विमर्श के लिए महत्वपूर्ण वैचारिक संदर्भ बने। समकालीन अकादमिक अध्ययनों में भी सावरकर को आधुनिक हिन्दू राष्ट्रवाद के प्रमुख वैचारिक निर्माताओं में माना गया है। हालाँकि, सावरकर की विरासत को केवल एक राजनीतिक संगठन या वर्तमान राजनीतिक दल की विचारधारा के साथ समान मानना उचित नहीं होगा। सावरकर का राजनीतिक चिंतन औपनिवेशिक भारत की विशिष्ट परिस्थितियों में विकसित हुआ था, जबकि वर्तमान भारतीय राजनीति सामाजिक, संवैधानिक और आर्थिक रूप से भिन्न परिस्थितियों में कार्य करती है। इसलिए समकालीन राजनीति में सावरकर की प्रासंगिकता का अध्ययन उनके विचारों के **पुनर्पाठ** के रूप में किया जाना अधिक उपयुक्त है।

2. सार्वजनिक जीवन में सावरकर की स्मृति

समकालीन भारत में सावरकर की स्मृति राजनीतिक और सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनी हुई है। उनकी स्मृति से जुड़े स्मारक, चित्र, प्रतिमाएँ, जयंती समारोह और सार्वजनिक कार्यक्रम उनके राजनीतिक व्यक्तित्व को वर्तमान पीढ़ी के सामने पुनः प्रस्तुत करने के माध्यम बनते हैं। इस प्रक्रिया में सावरकर की छवि केवल ऐतिहासिक व्यक्ति की नहीं रहती, बल्कि अलग-अलग राजनीतिक दृष्टिकोणों द्वारा उनकी अलग-अलग व्याख्या की जाती है। समर्थक उन्हें क्रांतिकारी राष्ट्रवादी, राजनीतिक विचारक और हिन्दुत्व के प्रमुख प्रतिपादक के रूप में देखते हैं, जबकि आलोचनात्मक अध्ययन उनके हिन्दुत्व को बहुसंख्यकवादी राजनीति तथा मुस्लिम समुदाय के प्रति उनके विचारों के संदर्भ में देखते हैं। Janaki Bakhle का 2024 का अध्ययन इसी जटिलता को रेखांकित करता है और सावरकर के व्यापक लेखन तथा उनके चारों ओर निर्मित महिमामंडित एवं आलोचनात्मक दोनों प्रकार की स्मृतियों का विश्लेषण करता है।

अतः सावरकर की सार्वजनिक स्मृति स्वयं राजनीतिक पहचान के निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा बन जाती है। किसी ऐतिहासिक व्यक्तित्व को किस रूप में याद किया जाता है, यह वर्तमान समाज की राजनीतिक आवश्यकताओं और वैचारिक प्राथमिकताओं को भी प्रतिबिंबित कर सकता है।

3. राजनीतिक भाषणों में सावरकर का संदर्भ

समकालीन राजनीतिक भाषणों में सावरकर का उल्लेख मुख्यतः राष्ट्रवाद, हिन्दुत्व, सांस्कृतिक पहचान और स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित विमर्शों में दिखाई देता है। राजनीतिक वक्ताओं द्वारा सावरकर को अलग-अलग वैचारिक उद्देश्यों से प्रस्तुत किया जाता है। एक ओर उन्हें राष्ट्रवादी परंपरा के प्रमुख व्यक्तित्व के रूप में उद्धृत किया जाता है, वहीं दूसरी ओर उनके हिन्दुत्व संबंधी विचारों का उपयोग बहुसंख्यकवाद और धर्मनिरपेक्षता पर बहस के संदर्भ में किया जाता है।

इस संदर्भ में राजनीतिक भाषणों का अध्ययन करते समय केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि सावरकर का नाम कितनी बार लिया गया, बल्कि यह देखना अधिक महत्वपूर्ण है कि **किस राजनीतिक संदर्भ में, किस उद्देश्य से और किस अर्थ में उनका उल्लेख किया गया**। यही विमर्शात्मक दृष्टिकोण सावरकर की समकालीन राजनीतिक प्रासंगिकता को समझने में अधिक उपयोगी होगा।

4. हिन्दुत्व और समकालीन राष्ट्रवाद

समकालीन भारतीय राजनीति में राष्ट्रवाद का विमर्श कई बार सांस्कृतिक पहचान, सभ्यतागत विरासत और राष्ट्रीय गौरव के प्रश्नों के साथ जुड़ता है। इस संदर्भ में सावरकर का हिन्दुत्व एक महत्वपूर्ण वैचारिक संदर्भ प्रदान करता है, क्योंकि उन्होंने राष्ट्र को साझा संस्कृति, इतिहास और भू-क्षेत्र से जोड़कर देखा था। फिर भी समकालीन राष्ट्रवाद को सीधे सावरकर के राष्ट्रवाद का पर्याय मानना उचित नहीं होगा। आज राष्ट्रवाद का विमर्श संविधान, लोकतंत्र, विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा और नागरिकता जैसे नए प्रश्नों से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए सावरकर के हिन्दुत्व का समकालीन पुनर्पाठ एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए जिसमें उनके मूल विचारों को वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप नए अर्थ प्राप्त होते हैं।

5. हिन्दुत्व एवं चुनावी राजनीति

हिन्दुत्व के चुनावी राजनीति से संबंध का अध्ययन समकालीन भारतीय राजनीति को समझने का महत्वपूर्ण आयाम है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दू राष्ट्रवादी राजनीति ने विभिन्न संगठनों और राजनीतिक दलों के माध्यम से अपना सामाजिक एवं राजनीतिक आधार विकसित किया। इस प्रक्रिया में सावरकर की हिन्दुत्व संबंधी अवधारणा एक महत्वपूर्ण वैचारिक संदर्भ के रूप में उपस्थित रही है। हालाँकि, चुनावी राजनीति में हिन्दुत्व के प्रभाव का मूल्यांकन केवल सावरकर के विचारों के आधार पर नहीं किया जा सकता। चुनावी राजनीति में जाति, वर्ग, क्षेत्र, विकास, नेतृत्व, स्थानीय मुद्दे और कल्याणकारी नीतियाँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए सावरकर और चुनावी हिन्दुत्व के संबंध का अध्ययन करते समय वैचारिक प्रभाव और प्रत्यक्ष चुनावी कारणों के बीच अंतर बनाए रखना आवश्यक है।

6. सावरकर की प्रतिमा और राजनीतिक प्रतीक

राजनीति में ऐतिहासिक व्यक्तित्व केवल विचारों के माध्यम से नहीं, बल्कि प्रतीकों के माध्यम से भी पुनर्जीवित होते हैं। सावरकर की प्रतिमा, चित्र, स्मारक, नामकरण तथा सार्वजनिक समारोह उनकी राजनीतिक स्मृति को वर्तमान में बनाए रखने वाले महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। इन प्रतीकों का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि वे अतीत और वर्तमान के बीच संबंध स्थापित करते हैं। सावरकर की प्रतिमा या चित्र को किसी सार्वजनिक स्थान पर स्थापित करना केवल स्मरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि उनके राजनीतिक योगदान और वैचारिक विरासत के बारे में एक विशेष दृष्टिकोण को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करना भी हो सकता है। इस प्रकार राजनीतिक प्रतीकों का अध्ययन सावरकर की समकालीन प्रासंगिकता को समझने का उपयोगी माध्यम है।

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि सावरकर की समकालीन राजनीतिक प्रासंगिकता को समझने के लिए उनके मूल हिन्दुत्व और वर्तमान राजनीतिक हिन्दुत्व के बीच सीधी समानता स्थापित करने के बजाय दोनों के बीच **निरंतरता, परिवर्तन और पुनर्व्याख्या** का अध्ययन आवश्यक है। सावरकर की मूल रचना *Hindutva: Who Is a Hindu?* तथा उनके बाद के राजनीतिक लेखन को समकालीन राजनीतिक भाषणों और सार्वजनिक दस्तावेजों के साथ पढ़ने से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि उनके विचारों का कौन-सा हिस्सा आज भी वैचारिक रूप से सक्रिय है और कौन-से अर्थ बाद की राजनीतिक परिस्थितियों में निर्मित हुए हैं।

इस प्रकार समकालीन भारतीय राजनीति में सावरकर का महत्व केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक समुदाय की परिभाषा से जुड़े वर्तमान विमर्श के एक महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में देखा जा सकता है।

सावरकर के हिन्दुत्व और समकालीन हिन्दुत्व के बीच संबंध

सावरकर के हिन्दुत्व और समकालीन भारतीय राजनीति में प्रयुक्त हिन्दुत्व के बीच संबंध को समझने के लिए दोनों को पूर्णतः समान मानना उचित नहीं होगा। सावरकर की हिन्दुत्व संबंधी अवधारणा एक विशिष्ट ऐतिहासिक और औपनिवेशिक संदर्भ में विकसित हुई थी, जबकि समकालीन हिन्दुत्व लोकतांत्रिक राजनीति, चुनावी प्रतिस्पर्धा, संवैधानिक व्यवस्था, संचार माध्यमों और बदलती सामाजिक परिस्थितियों के बीच विकसित हुआ है। इसलिए इनके संबंध को निरंतरता और परिवर्तन दोनों के संदर्भ में देखना आवश्यक है।

i. वैचारिक निरंतरता

सावरकर के मूल विचारों और समकालीन हिन्दुत्व के बीच कुछ वैचारिक समानताएँ दिखाई देती हैं। इनमें हिन्दू सांस्कृतिक पहचान, भारतीय इतिहास की विशिष्ट व्याख्या, राष्ट्रीय गौरव, सांस्कृतिक एकता और भारत की सभ्यतागत पहचान पर बल प्रमुख हैं। सावरकर ने हिन्दुत्व को हिन्दू समाज की सामूहिक सांस्कृतिक पहचान से जोड़ा था। समकालीन हिन्दुत्व के विमर्श में भी भारतीय राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान और हिन्दू सभ्यतागत विरासत को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। इसी प्रकार राष्ट्रीय चेतना और ऐतिहासिक स्मृति का राजनीतिक उपयोग दोनों संदर्भों में महत्वपूर्ण दिखाई देता है। सावरकर के चिंतन में इतिहास सामूहिक चेतना के निर्माण का माध्यम था, जबकि वर्तमान राजनीतिक विमर्श में भी ऐतिहासिक घटनाओं, प्रतीकों और सांस्कृतिक स्मृतियों का उपयोग राजनीतिक पहचान को मजबूत करने के लिए किया जाता है।

हालाँकि, इन समानताओं को प्रत्यक्ष वैचारिक समानता नहीं माना जाना चाहिए। इनके बीच ऐतिहासिक परिस्थितियों और राजनीतिक उद्देश्यों का अंतर भी महत्वपूर्ण है।

ii. वैचारिक परिवर्तन

समय के साथ हिन्दुत्व की राजनीतिक व्याख्या में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। सावरकर का हिन्दुत्व मुख्यतः औपनिवेशिक शासन, हिन्दू राजनीतिक एकता और राष्ट्रीय समुदाय की परिभाषा से संबंधित था। वर्तमान में हिन्दुत्व का विमर्श लोकतांत्रिक चुनाव, शासन, विकास, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय सुरक्षा, नागरिकता और सांस्कृतिक राजनीति जैसे अनेक प्रश्नों से जुड़ गया है। इस परिवर्तन के कारण समकालीन हिन्दुत्व का स्वरूप केवल सावरकर के मूल लेखन से निर्धारित नहीं होता। बाद के वैचारिक विचारकों, संगठनों और राजनीतिक प्रक्रियाओं ने हिन्दुत्व को अलग-अलग संदर्भों में नए अर्थ प्रदान किए हैं। अतः वर्तमान हिन्दुत्व को सावरकर के विचारों का स्थिर और अपरिवर्तित रूप मानना ऐतिहासिक दृष्टि से उचित नहीं होगा।

iii. राजनीतिक पुनर्संदर्भीकरण

समकालीन राजनीति में सावरकर के विचारों का पुनर्पाठ एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। उनके ऐतिहासिक लेखन और राजनीतिक जीवन को वर्तमान राजनीतिक आवश्यकताओं के संदर्भ में नए अर्थ दिए जाते हैं। कभी सावरकर को मुख्यतः क्रांतिकारी राष्ट्रवादी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो कभी हिन्दुत्व के प्रमुख वैचारिक प्रतिपादक के रूप में। इस पुनर्संदर्भीकरण में सावरकर के विचारों के कुछ पक्षों को अधिक प्रमुखता मिल सकती है और कुछ पक्ष अपेक्षाकृत कम चर्चित रह सकते हैं। इसलिए सावरकर के समकालीन राजनीतिक उपयोग का अध्ययन करते समय मूल स्रोतों और वर्तमान राजनीतिक विमर्श के बीच तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

सावरकर और समकालीन हिन्दुत्व के बीच संबंध को **न तो पूर्ण निरंतरता और न ही पूर्ण विच्छेद** के रूप में समझना अधिक उचित होगा। इसमें कुछ वैचारिक तत्व निरंतर दिखाई देते हैं, जबकि राजनीतिक परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ उनके अर्थ और उपयोग में परिवर्तन भी हुआ है। यही निरंतरता और परिवर्तन सावरकर के हिन्दुत्व के समकालीन पुनर्पाठ को समझने का महत्वपूर्ण आधार है।

हिन्दुत्व और राजनीतिक पहचान

राजनीतिक पहचान से आशय उस सामूहिक चेतना से है जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं को किसी राजनीतिक, सांस्कृतिक अथवा सामाजिक समुदाय का सदस्य समझता है। समकालीन भारतीय राजनीति में हिन्दुत्व को राजनीतिक पहचान के संदर्भ में देखने पर यह स्पष्ट होता है कि इसमें धार्मिक पहचान के साथ संस्कृति, इतिहास, राष्ट्रीयता और सामूहिक स्मृति के तत्व भी जुड़े हुए हैं।

i. हिन्दू राजनीतिक पहचान

हिन्दुत्व के राजनीतिक विमर्श में हिन्दू पहचान को केवल व्यक्तिगत धार्मिक आस्था के रूप में नहीं, बल्कि व्यापक सांस्कृतिक और राजनीतिक समुदाय की पहचान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सावरकर के चिंतन में भी हिन्दू पहचान को साझा इतिहास, संस्कृति और भारतभूमि से जुड़े संबंधों के आधार पर समझने का प्रयास किया गया था। समकालीन राजनीति में यह पहचान विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों के साथ जुड़कर व्यापक राजनीतिक लामबंदी का आधार बन सकती है।

ii. सांस्कृतिक अस्मिता और सामूहिक स्मृति

सांस्कृतिक अस्मिता किसी समुदाय की भाषा, परंपरा, ऐतिहासिक स्मृतियों, प्रतीकों और सांस्कृतिक विरासत से निर्मित होती है। हिन्दुत्व के विमर्श में भारतीय सभ्यता, धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराओं और ऐतिहासिक स्मृतियों को राष्ट्रीय पहचान से जोड़ने का प्रयास दिखाई देता है। सामूहिक स्मृति इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतीत की घटनाओं और व्यक्तित्वों की स्मृति वर्तमान राजनीतिक पहचान को प्रभावित कर सकती है। सावरकर स्वयं इतिहास को राष्ट्रीय चेतना के निर्माण से जोड़ते थे।

iii. 'हम' और 'अन्य' की राजनीतिक संरचना

हर सामूहिक पहचान के निर्माण में 'हम' और 'अन्य' की अवधारणाएँ महत्वपूर्ण हो सकती हैं। हिन्दुत्व के राजनीतिक विमर्श में 'हम' की पहचान हिन्दू सांस्कृतिक समुदाय के संदर्भ में निर्मित हो सकती है, जबकि 'अन्य' की अवधारणा धार्मिक या सांस्कृतिक भिन्नता के आधार पर निर्मित होने की संभावना रहती है।

यहीं से राजनीतिक पहचान का प्रश्न बहुलतावादी लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि सामूहिक पहचान राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में अत्यधिक कठोर रूप ग्रहण करती है, तो सामाजिक विभाजन और राजनीतिक ध्रुवीकरण की संभावना बढ़ सकती है।

iv. बहुसंख्यक राजनीतिक लामबंदी

बहुसंख्यक पहचान का राजनीतिक संगठन लोकतांत्रिक राजनीति में चुनावी समर्थन और राजनीतिक लामबंदी का महत्वपूर्ण आधार बन सकता है। हिन्दुत्व के संदर्भ में हिन्दू पहचान को राजनीतिक रूप से संगठित करने की प्रक्रिया का अध्ययन इसी दृष्टि से किया जा सकता है। हालाँकि, चुनावी परिणामों को केवल धार्मिक पहचान से

समझना उचित नहीं होगा। जाति, वर्ग, क्षेत्र, नेतृत्व, आर्थिक मुद्दे, सरकारी नीतियाँ और स्थानीय राजनीतिक परिस्थितियाँ भी राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करती हैं। इसलिए हिन्दुत्व और चुनावी लामबंदी के संबंध का विश्लेषण बहु-आयामी दृष्टिकोण से किया जाना आवश्यक है।

v. अल्पसंख्यक पहचान

हिन्दुत्व के राजनीतिक विमर्श का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष अल्पसंख्यक समुदायों की स्थिति है। जब राष्ट्र की पहचान को किसी बहुसंख्यक सांस्कृतिक परंपरा से जोड़ा जाता है, तो अल्पसंख्यक समुदायों की समान नागरिकता, प्रतिनिधित्व और सांस्कृतिक अधिकारों से जुड़े प्रश्न स्वाभाविक रूप से सामने आते हैं। यहाँ भारतीय संविधान का समान नागरिकता और धार्मिक स्वतंत्रता का ढाँचा महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करता है। इसलिए हिन्दुत्व और राजनीतिक पहचान का अध्ययन केवल बहुसंख्यक पहचान तक सीमित न रहकर उसके अल्पसंख्यक पहचान पर पड़ने वाले प्रभावों को भी ध्यान में रखता है।

vi. राष्ट्रवाद और राजनीतिक ध्रुवीकरण

हिन्दुत्व और राष्ट्रवाद के बीच संबंध समकालीन राजनीतिक विमर्श का महत्वपूर्ण विषय है। जब सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रवाद के साथ जोड़ा जाता है, तो वह राजनीतिक एकता का आधार भी बन सकती है और राजनीतिक विभाजन का आधार भी। इसलिए यह आवश्यक है कि हिन्दुत्व को स्वतः राजनीतिक ध्रुवीकरण का कारण या स्वतः राष्ट्रीय एकता का माध्यम न मानते हुए विभिन्न राजनीतिक परिस्थितियों में उसके वास्तविक प्रभाव का विश्लेषण किया जाए।

हिन्दुत्व को Identity Politics के संदर्भ में देखने पर यह स्पष्ट होता है कि इसकी राजनीतिक शक्ति केवल धार्मिक पहचान से नहीं, बल्कि संस्कृति, इतिहास, सामूहिक स्मृति और राष्ट्रवाद के साथ उसके संबंध से निर्मित होती है। इसके साथ ही, बहुलतावादी समाज में बहुसंख्यक पहचान और समान नागरिकता के बीच संतुलन का प्रश्न भी महत्वपूर्ण हो जाता है। अतः हिन्दुत्व और राजनीतिक पहचान का अध्ययन भारतीय लोकतंत्र में पहचान की राजनीति की व्यापक प्रकृति को समझने का माध्यम प्रदान करता है।

आलोचनात्मक विश्लेषण

सावरकर के हिन्दुत्व का आलोचनात्मक अध्ययन किसी पूर्वनिर्धारित समर्थन या विरोध के आधार पर नहीं, बल्कि उसके वैचारिक आधार, ऐतिहासिक संदर्भ और समकालीन राजनीतिक प्रभावों के संतुलित परीक्षण के आधार पर किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से हिन्दुत्व में निहित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और उसकी संभावित राजनीतिक सीमाओं दोनों को समझना आवश्यक है।

i. क्या हिन्दुत्व को केवल सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में समझना पर्याप्त है?

सावरकर ने हिन्दुत्व को धार्मिक आस्था से व्यापक सांस्कृतिक अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया। इसमें इतिहास, संस्कृति, भूमि और सामूहिक पहचान महत्वपूर्ण थे। इसलिए इसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में समझना उपयोगी है, लेकिन केवल इसी आधार पर इसकी राजनीतिक प्रकृति को पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। जब सांस्कृतिक पहचान राजनीतिक संगठन और सत्ता की राजनीति से जुड़ती है, तब प्रतिनिधित्व, नागरिकता, बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक संबंध और राजनीतिक लामबंदी जैसे प्रश्न भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

ii. सावरकर की राष्ट्र अवधारणा और नागरिक राष्ट्रवाद

सावरकर की राष्ट्र अवधारणा सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों को महत्व देती है, जबकि आधुनिक नागरिक राष्ट्रवाद समान नागरिकता और संवैधानिक अधिकारों पर अधिक बल देता है। इस अंतर के कारण दोनों अवधारणाओं में वैचारिक भिन्नता दिखाई देती है। इस भिन्नता का अर्थ यह नहीं है कि दोनों के बीच कोई संबंध संभव नहीं है, बल्कि यह कि राष्ट्र की एकता और सदस्यता को परिभाषित करने के उनके आधार अलग हैं।

iii. पितृभूमि-पुण्यभूमि की राजनीतिक प्रासंगिकता

पितृभूमि और पुण्यभूमि की अवधारणा सावरकर के हिन्दुत्व की विशिष्ट विशेषता है। यह भारत के साथ सांस्कृतिक एवं धार्मिक संबंध को राष्ट्रीय पहचान से जोड़ती है। राजनीतिक दृष्टि से इसकी प्रासंगिकता इस प्रश्न में निहित है कि बहुधार्मिक समाज में राष्ट्रीय पहचान के लिए धार्मिक-सांस्कृतिक संबंध को कितना महत्व दिया जाना चाहिए।

iv. बहुलतावादी समाज में सांस्कृतिक राष्ट्र की सीमाएँ

भारत जैसे बहुलतापूर्ण समाज में सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा सामाजिक एकता को मजबूत करने का प्रयास कर सकती है, लेकिन यदि किसी एक सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय पहचान का प्रमुख या अनिवार्य आधार बना दिया जाए, तो अन्य समुदायों की समान भागीदारी और पहचान से जुड़े प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की लोकतांत्रिक उपयोगिता का मूल्यांकन उसके बहुलतावाद, समान नागरिकता और संवैधानिक अधिकारों के साथ संबंध के आधार पर किया जाना चाहिए।

v. क्या समकालीन हिन्दुत्व सावरकर के विचारों का विस्तार है?

यह प्रश्न इस शोध का महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक निष्कर्ष बिंदु है। समकालीन हिन्दुत्व में सावरकर के कुछ मूल तत्व—जैसे हिन्दू सांस्कृतिक पहचान, राष्ट्रीय गौरव और इतिहास की विशिष्ट व्याख्या—स्पष्ट रूप से दिखाई दे सकते हैं। लेकिन समकालीन हिन्दुत्व केवल सावरकर के विचारों से निर्मित नहीं है। समय के साथ विभिन्न राजनीतिक संगठनों, विचारकों, सामाजिक परिस्थितियों और लोकतांत्रिक चुनावी राजनीति ने हिन्दुत्व की व्याख्या को प्रभावित किया है। इसलिए समकालीन हिन्दुत्व को सावरकर के विचारों का **विस्तार, पुनर्व्याख्या और राजनीतिक पुनर्निर्माण—तीनों के सम्मिलित परिणाम** के रूप में देखना अधिक उपयुक्त होगा।

आलोचनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सावरकर का हिन्दुत्व भारतीय राष्ट्रवाद की एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक व्याख्या प्रस्तुत करता है, लेकिन उसका मूल्यांकन आधुनिक बहुलतावादी लोकतंत्र और संवैधानिक नागरिकता के संदर्भ से अलग करके नहीं किया जा सकता। इसकी राजनीतिक शक्ति और सीमाएँ दोनों इस बात से जुड़ी हैं कि सांस्कृतिक पहचान को राजनीतिक समुदाय की अवधारणा के साथ किस प्रकार जोड़ा जाता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वीर सावरकर की हिन्दुत्व अवधारणा तथा समकालीन भारतीय राजनीति में उसके पुनर्पाठ का विश्लेषण किया गया है। विषय की प्रकृति एवं अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोध मुख्यतः **गुणात्मक (Qualitative), विश्लेषणात्मक (Analytical) एवं व्याख्यात्मक (Interpretative)** प्रकृति का रहा। अध्ययन में प्राथमिक एवं

द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग करते हुए सावरकर के मूल विचारों, उनके ऐतिहासिक संदर्भ तथा समकालीन राजनीतिक विमर्श के बीच संबंधों का अध्ययन किया गया।

i. अध्ययन की प्रमुख विधियाँ

a. वैचारिक विश्लेषण (Conceptual Analysis) — अध्ययन में सावरकर की हिन्दुत्व, राष्ट्रवाद, राष्ट्र, संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना एवं राजनीतिक पहचान संबंधी प्रमुख अवधारणाओं का वैचारिक विश्लेषण किया गया। विशेष रूप से यह समझने का प्रयास किया गया कि सावरकर ने हिन्दुत्व को हिन्दू धर्म से किस प्रकार अलग किया तथा उसे राष्ट्र और सांस्कृतिक पहचान से किस प्रकार जोड़ा।

b. पाठ विश्लेषण (Textual Analysis) — सावरकर की मूल रचनाओं, लेखों एवं राजनीतिक वक्तव्यों का पाठ विश्लेषण किया गया। *Hindutva: Who Is a Hindu?* को अध्ययन के प्रमुख प्राथमिक स्रोत के रूप में लेते हुए 'हिन्दू', 'पितृभूमि', 'पुण्यभूमि', संस्कृति, राष्ट्र और हिन्दू राष्ट्र संबंधी विचारों का मूल पाठ के संदर्भ में परीक्षण किया गया।

c. ऐतिहासिक विश्लेषण (Historical Analysis) — सावरकर के विचारों को उनके ऐतिहासिक एवं राजनीतिक संदर्भ में समझने के लिए औपनिवेशिक भारत की परिस्थितियों, राष्ट्रवादी आंदोलन तथा उस समय विकसित हो रही विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं के संदर्भ में उनका अध्ययन किया गया। इससे सावरकर के हिन्दुत्व के उद्भव और उसके वैचारिक विकास को उसके समकालीन संदर्भ में समझने में सहायता मिली।

d. तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) — सावरकर की राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद संबंधी अवधारणाओं का आवश्यकतानुसार गांधी और जवाहरलाल नेहरू के राष्ट्रवाद तथा भारतीय संविधान की नागरिक एवं धर्मनिरपेक्ष दृष्टि के साथ तुलनात्मक परीक्षण किया गया। तुलना का उद्देश्य किसी विचारधारा को श्रेष्ठ या निम्न सिद्ध करना नहीं, बल्कि विभिन्न राष्ट्रवादी दृष्टिकोणों के वैचारिक आधारों को स्पष्ट करना रहा।

e. विमर्श विश्लेषण (Discourse Analysis) — समकालीन भारतीय राजनीतिक विमर्श में सावरकर और हिन्दुत्व के संदर्भों का विश्लेषण किया गया। इसके लिए उपलब्ध राजनीतिक भाषणों, घोषणापत्रों, संसदीय वक्तव्यों तथा अन्य आधिकारिक सार्वजनिक दस्तावेजों का अध्ययन किया गया। विशेष रूप से यह देखा गया कि समकालीन राजनीतिक संदर्भ में सावरकर के विचारों को किस प्रकार प्रस्तुत, व्याख्यायित और पुनर्संदर्भित किया गया है।

ii. प्राथमिक स्रोत

अध्ययन में निम्नलिखित प्राथमिक स्रोतों का उपयोग किया गया—

1. वीर सावरकर की *Hindutva: Who Is a Hindu?* तथा उनकी अन्य मूल रचनाएँ।
2. सावरकर के उपलब्ध भाषण, लेख एवं राजनीतिक वक्तव्य।
3. हिन्दू महासभा से संबंधित उपलब्ध ऐतिहासिक दस्तावेज।
4. भारत का संविधान।
5. संविधान सभा की बहसें एवं संबंधित अभिलेख।
6. संसद की आधिकारिक बहसें एवं अभिलेख।

7. समकालीन राजनीतिक दलों के आधिकारिक घोषणापत्र।
8. आधिकारिक राजनीतिक भाषण एवं सार्वजनिक वक्तव्य।

इन प्राथमिक स्रोतों के माध्यम से सावरकर के मूल विचारों और समकालीन राजनीतिक विमर्श के बीच संबंधों का प्रत्यक्ष अध्ययन किया गया।

iii. द्वितीयक स्रोत

अध्ययन के लिए मान्य एवं प्रकाशित अकादमिक पुस्तकों, शोध-पत्रों, **Peer-reviewed journals**, शोध-प्रबंधों तथा राष्ट्रवाद, हिन्दुत्व, धर्मनिरपेक्षता, राजनीतिक पहचान और समकालीन भारतीय राजनीति से संबंधित विद्वत साहित्य का उपयोग किया गया। द्वितीयक साहित्य के माध्यम से सावरकर के विचारों की विभिन्न अकादमिक व्याख्याओं तथा हिन्दुत्व के ऐतिहासिक एवं समकालीन राजनीतिक विकास को समझने का प्रयास किया गया।

iv. स्रोतों के चयन एवं विश्लेषण का आधार

अध्ययन में स्रोतों का चयन उनकी **प्रामाणिकता, प्रासंगिकता, विश्वसनीयता और अकादमिक उपयोगिता** को ध्यान में रखते हुए किया गया। सावरकर के मूल विचारों की व्याख्या के लिए प्राथमिक स्रोतों को आधार बनाया गया, जबकि उनके विचारों की विभिन्न व्याख्याओं और समकालीन राजनीतिक संदर्भ को समझने के लिए विश्वसनीय द्वितीयक अकादमिक साहित्य का उपयोग किया गया।

समकालीन राजनीतिक भाषणों, डिजिटल सामग्री और सोशल मीडिया में उपलब्ध सूचनाओं का उपयोग सावधानीपूर्वक किया गया। किसी कथन अथवा उद्धरण को केवल सोशल मीडिया पर उपलब्ध होने के आधार पर प्रमाणित तथ्य नहीं माना गया। जहाँ संभव हुआ, संबंधित सामग्री को मूल भाषण, आधिकारिक दस्तावेज अथवा विश्वसनीय प्राथमिक स्रोत से सत्यापित किया गया।

v. विश्लेषण की प्रक्रिया

अध्ययन में प्राप्त सामग्री को विषयगत एवं वैचारिक आधार पर वर्गीकृत किया गया। सावरकर के मूल हिन्दुत्व से संबंधित सामग्री को राष्ट्र, संस्कृति, भूमि, इतिहास, सामूहिक पहचान और हिन्दू राष्ट्र जैसे प्रमुख वैचारिक आयामों के अंतर्गत व्यवस्थित किया गया। इसके बाद समकालीन राजनीतिक विमर्श में हिन्दुत्व और सावरकर के संदर्भों का परीक्षण किया गया। विश्लेषण के दौरान विशेष रूप से तीन पक्षों पर ध्यान केंद्रित किया गया—**वैचारिक निरंतरता, वैचारिक परिवर्तन और राजनीतिक पुनर्संदर्भीकरण**। इस प्रक्रिया के माध्यम से यह निर्धारित करने का प्रयास किया गया कि समकालीन हिन्दुत्व में सावरकर के मूल विचारों के कौन-से तत्व निरंतर दिखाई देते हैं, किन तत्वों में परिवर्तन हुआ है तथा वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में उनके विचारों को किस प्रकार नए अर्थ प्राप्त हुए हैं।

इस प्रकार अपनाई गई शोध पद्धति ने अध्ययन को केवल सावरकर के विचारों के वर्णन तक सीमित न रखते हुए उनके हिन्दुत्व और समकालीन भारतीय राजनीति के बीच संबंध का **स्रोत-आधारित, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन** करने का आधार प्रदान किया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन **"समकालीन भारतीय राजनीति में वीर सावरकर के हिन्दुत्व की अवधारणा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"** में सावरकर के मूल हिन्दुत्व, उनके राष्ट्रवाद, भारतीय धर्मनिरपेक्षता, राजनीतिक पहचान तथा समकालीन भारतीय

राजनीति में उनके विचारों के पुनर्पाठ का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि सावरकर का हिन्दुत्व केवल धार्मिक आस्था की अवधारणा नहीं है, बल्कि इसमें **राष्ट्र, संस्कृति, इतिहास, भू-क्षेत्र और सामूहिक पहचान** के तत्व परस्पर जुड़े हुए हैं। *Hindutva: Who Is a Hindu?* के अध्ययन से विशेष रूप से 'पितृभूमि' और 'पुण्यभूमि' की अवधारणाओं तथा साझा सांस्कृतिक-ऐतिहासिक चेतना के महत्व की पुष्टि होती है।

अध्ययन के उद्देश्यों के संदर्भ में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सावरकर की हिन्दुत्व अवधारणा को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में समझना आवश्यक है। सावरकर के लिए राष्ट्र की पहचान में सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक एकता का महत्वपूर्ण स्थान था, जो आधुनिक संवैधानिक नागरिकता की अवधारणा से वैचारिक रूप से भिन्न आधार प्रस्तुत करती है। गांधी और नेहरू के राष्ट्रवाद से सीमित तुलना करने पर भी सावरकर की विशिष्टता मुख्यतः **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और हिन्दू सामूहिक पहचान** पर उनके विशेष बल के रूप में सामने आती है।

समकालीन राजनीतिक विमर्श के विश्लेषण से यह पाया गया कि वर्तमान हिन्दुत्व में सावरकर के विचारों के कुछ प्रमुख तत्व—जैसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, हिन्दू पहचान, राष्ट्रीय गौरव और ऐतिहासिक चेतना—निरंतर दिखाई देते हैं। किंतु समकालीन हिन्दुत्व को सावरकर के मूल विचारों का अपरिवर्तित रूप मानना उचित नहीं है। लोकतांत्रिक राजनीति, चुनावी प्रतिस्पर्धा, सामाजिक परिवर्तन, संवैधानिक व्यवस्था तथा नए राजनीतिक विमर्शों के प्रभाव से हिन्दुत्व की राजनीतिक व्याख्या में परिवर्तन और पुनर्संदर्भीकरण हुआ है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि हिन्दुत्व राजनीतिक पहचान (**Political Identity**) के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सांस्कृतिक अस्मिता, सामूहिक स्मृति और राष्ट्रीय पहचान इसके प्रमुख आधार हैं; वहीं बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक संबंध, 'हम' और 'अन्य' की संरचना तथा राजनीतिक ध्रुवीकरण इसके महत्वपूर्ण आलोचनात्मक आयाम हैं। इसलिए हिन्दुत्व को केवल धार्मिक अथवा चुनावी घटना के रूप में देखना इसकी व्यापक राजनीतिक प्रकृति को सीमित कर देता है।

शोध प्रश्नों के संदर्भ में निष्कर्ष

अध्ययन के प्रमुख शोध प्रश्नों के आधार पर कहा जा सकता है कि **सावरकर का हिन्दुत्व मूलतः सांस्कृतिक-राजनीतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा है**, जिसमें हिन्दू पहचान को साझा इतिहास, संस्कृति और भारतभूमि के साथ संबंध के आधार पर परिभाषित किया गया है। समकालीन राजनीति में इसका पुनर्पाठ हुआ है, जिसमें मूल वैचारिक तत्वों के साथ नए राजनीतिक अर्थ और संदर्भ भी जुड़े हैं। अतः समकालीन हिन्दुत्व को सावरकर के विचारों की **निरंतरता और पुनर्निर्माण—दोनों** के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

परिकल्पना का परीक्षण

अध्ययन की मूल परिकल्पना कि **सावरकर का हिन्दुत्व भारतीय राष्ट्रवाद की सांस्कृतिक अवधारणा को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण वैचारिक आधार है तथा समकालीन राजनीति में इसके तत्व नए राजनीतिक संदर्भों में पुनर्व्याख्यायित हुए हैं**, उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक सामग्री के विश्लेषण से **समर्थित होती है**। साथ ही, अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि समकालीन राजनीतिक हिन्दुत्व को पूर्णतः सावरकर की मूल अवधारणा के समान मानना उचित नहीं है।

अतः समग्र रूप से निष्कर्ष यह है कि **सावरकर का हिन्दुत्व आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में राष्ट्र, सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक राजनीतिक चेतना को समझने का एक महत्वपूर्ण वैचारिक संदर्भ है। इसकी समकालीन प्रासंगिकता को समझने के लिए मूल विचारों की ऐतिहासिक निरंतरता के साथ-साथ उनके राजनीतिक पुनर्पाठ, परिवर्तन और संवैधानिक बहुलतावाद के साथ संबंध का आलोचनात्मक अध्ययन आवश्यक है।**

संदर्भ सूची

1. एंडरसन, डब्ल्यू. के., एवं डैमले, एस. डी. (1987), *केसरिया बंधुत्व: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिंदू पुनरुत्थानवाद*, विस्तार पब्लिकेशन्स।
2. एंडरसन, ई., एवं जाफरलो, सी. (2018), हिंदू राष्ट्रवाद और "सार्वजनिक क्षेत्र का भगवाकरण": क्रिस्टोफ जाफरलो के साथ एक साक्षात्कार, *कंटेम्परेरी साउथ एशिया*, 26(4)।
3. बाखले, जे. (2010), राष्ट्र पहले? विनायक दामोदर सावरकर (1883–1966) और *हिन्दुत्व के मूल तत्व* का लेखन, *पब्लिक कल्चर*, 22(1), 149–186।
4. बाखले, जे. (2024), *सावरकर और हिन्दुत्व का निर्माण*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. भट्ट, सी. (2001), *हिंदू राष्ट्रवाद: उत्पत्ति, विचारधाराएँ और आधुनिक मिथक*, बर्ग।
6. चाको, पी. (2019), हिंदुत्व का बाजारीकरण: हिंदू राष्ट्रवाद में राज्य, समाज और बाजार, *मॉडर्न एशियन स्टडीज़*, 53(2), 377।
7. चतुर्वेदी, वी. (2010), कर्म के माध्यम से ज्ञान पर पुनर्विचार: वी. डी. सावरकर, भगवद्गीता और युद्ध के इतिहास, *मॉडर्न इंटेलेक्चुअल हिस्ट्री*, 7(2), 417।
8. गोपालकृष्णन, एस. (2006), एक "नए भारत" को परिभाषित करना, निर्मित करना और नियंत्रित करना: नवउदारवाद और हिंदुत्व के बीच संबंध, *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 41(26), 2803।
9. हैनसेन, टी. बी. (1999)। *केसरिया लहर: आधुनिक भारत में लोकतंत्र और हिंदू राष्ट्रवाद*। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. हेरिडिया, आर. सी. (2009), गांधी का हिंदू धर्म और सावरकर का हिंदुत्व, *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 44(29), 62।
11. जाफरलो, सी. (1996), *हिंदू राष्ट्रवादी आंदोलन और भारतीय राजनीति: 1925 से 1990 के दशक तक—पहचान-निर्माण, स्थापना और लामबंदी की रणनीतियाँ*, हर्स्ट।
12. जाफरलो, सी. (संपा.) (2007), *हिंदू राष्ट्रवाद: एक पाठ-संग्रह*, परमानेंट ब्लैक।
13. कीर, डी. (1988), *वीर सावरकर* (तीसरा संस्करण), पॉपुलर प्रकाशन।
14. मेनन, पी. (2021), शरीर और सीमाओं के बीच: एम. के. गांधी और वी. डी. सावरकर के विचारों में प्रकृति का स्थान, *मॉडर्न एशियन स्टडीज़*, 55(1), 116–151।
15. मिश्रा, ए. (1999), स्वतंत्रता-पूर्व भारत में सावरकर और इस्लाम संबंधी विमर्श, *जर्नल ऑफ एशियन हिस्ट्री*, 33(2), 142–184।
16. मिश्रा, ए. (2004), *पहचान और धर्म: भारत में इस्लाम-विरोध की आधारभूमि*, सेज पब्लिकेशन्स।
17. नंदी, ए. (2014), भारत में राष्ट्रपिता का अस्वीकारित स्वरूप: विनायक दामोदर सावरकर और भारतीय राष्ट्रवाद में राक्षसी तथा आकर्षक तत्व, *इंटर-एशिया कल्चरल स्टडीज़*, 15(1), 91–112।
18. नूरानी, ए. जी. (2002), *सावरकर और हिंदुत्व: गोडसे संबंध*, लेफ्टवर्ड बुक्स।
19. सरकार, एस. (2004), *राष्ट्रवादी सीमाओं से परे: उत्तर-आधुनिकतावाद, हिंदुत्व और इतिहास का पुनर्स्थापन*, परमानेंट ब्लैक।

20. शर्मा, ए. (2002), हिंदू, हिंदुस्तान, हिंदू धर्म और हिंदुत्व पर, *न्यूमेन*, 49(1), 36।
21. शानी, ओ. (2005), भारत में हिंदू राष्ट्रवाद का उदय: 1980 के दशक में अहमदाबाद का अध्ययन, *मॉडर्न एशियन स्टडीज़*, 39(4), 861।
22. विसाना, वी. (2023), वी. डी. सावरकर के हिंदू राष्ट्रवाद के निर्माण में गौरव और अपमान, *द हिस्टॉरिकल जर्नल*, 66(1), 165।
23. सावरकर, वी. डी. (1909), *1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम*, मूल संस्करण।
24. सावरकर, वी. डी. (1949), *हिंदू राष्ट्र दर्शन*, वीर सावरकर प्रकाशन।
25. सावरकर, वी. डी. (1969), *हिंदुत्व: हिंदू कौन है?* एस. एस. सावरकर।
26. सावरकर, वी. डी. (1984), *हिंदू राष्ट्र दर्शन* (द्वितीय संस्करण), वीर सावरकर प्रकाशन।
27. भारतीय संविधान सभा, (1946–1950), *संविधान सभा की बहसें*, भारत सरकार।
28. भारत सरकार, विधायी विभाग, (2024), *भारत का संविधान*, विधि एवं न्याय मंत्रालय।
29. *हिंदुस्तान टाइम्स*, (2024, 31 मार्च), *राजनीति और वैचारिक चिंतन पर सावरकर के प्रभाव को समझना*, हिंदुस्तान टाइम्स।
30. *इंडिया टुडे*, (2024, 24 मई), *हिंदू राष्ट्रवादी: जानकी बाखले की 'सावरकर एंड द मेकिंग ऑफ हिंदुत्व'*, इंडिया टुडे।
31. *द इंडियन एक्सप्रेस*, (2023), *हिंदुस्तान और भारत, सनातन धर्म और हिंदू धर्म: सावरकर ने इन्हें किस प्रकार परिभाषित किया*, द इंडियन एक्सप्रेस।
32. *द इंडियन एक्सप्रेस*, (2024), *सावरकर ने 'हिंदूडम' की अपनी अवधारणा किस प्रकार निर्मित की*, द इंडियन एक्सप्रेस।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM